राजस्थान का अपवाह तंत्र : नदियाँ एवं झील

- राजस्थान मे चम्बल व माही के अतिरिक्त अन्य कोई नदी बारहमासी नहीं है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चम्बल नदी में उपलब्ध है।
- राजस्थान की अधिकांश नदियों का अरावली पर्वत के पूर्व में प्रवाह क्षेत्र है।
- राज्य में बनास नदी का जलग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।
- राज्य में सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में है।
- राजस्थान की सबसे बड़ी नदी चम्बल है।
- पूर्णत: राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है।
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना की गई 1955 में इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौप दिया। 1971 से इस बोर्ड को भू-जल विभाग के नाम से जाना जाता ही। इसका कार्यालय जोधपुर है।
- राज्य के पूर्णत: बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जलग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।
- चम्बल नदी पर भैंसरोडगढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया प्रपात तथा माँगली नदी पर बूँदी में भीमलत प्रताप है।
- सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियाँ : चम्बल, बनास व लूनी। प्रत्येक नदी 6 जिलों में बहती है।
- अंतरराज्यीय सीमा (राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा) बनाने वाली राज्य की एकमात्र नदी चम्बल है।

राज्य की नदियों का क्षेत्रवार वर्गीकरण :

(A) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान: लूनी, जवाई, सूकड़ी, बाण्डी (हेमावास, पाली), सागी, जोजड़ी, घग्घर, काँतली, काकनी/काकनेय (मसूरदी)।

(B) दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान: पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल व सेई।

(C) दक्षिणी राजस्थान : माही, सोम, जाखम, अनास, मोरेन।

(D) दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान: चम्बल, कुनु, पार्वती, काली सिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, आलनिया, चाकण, छोटी काली सिंध, बामनी, बनास, बेड़च, गंभीरी, कोठारी, खारी, माशी, मोरेल, कालीसिल, डाई, सोहादरा, ढीला।

राजस्थान की नदियों को तीन भागों में विभक्त किया गया है:-

1. **बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ** - चम्बल, बनास, काली सिंध, पार्वती, बाणगंगा, खारी, बेड़च, गंभीर आदि नदियाँ अरावली के पूर्वी भाग में विद्यमान है। इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी ढाल तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विन्ध्याचल पर्वत है। ये सभी नदियाँ अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती है।
2. **अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ** - माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूनी आदि। पश्चिमी बनास व लूनी नदी गुजरात में कच्छ के रन में विलुप्त हो जाती है।
3. **अन्त: प्रवाहित नदियाँ** - उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ छोटी नदियाँ भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रवाहित होकर राज्य में अपने प्रवाह क्षेत्र में ही विलुप्त हो जाती हैं तथा जिनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता है, इन्हें **आंतरिक जल प्रवाह** की नदियाँ कहा जाता है। ये नदियाँ हैं- **काकनी, काँतली, साबी, घग्घर, मेन्था, बाँडी, रूपनगढ़** आदि।

राज्य में **चूरू व बीकानेर ऐसे जिले हैं, जहाँ कोई नदी नहीं हैं।** गंगानगर में यद्यपि पृथक से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर **घग्घर की बाढ़ का** पानी सूरतगढ़ व अनूपगढ़ तक तथा कभी-कभी फोर्ट अब्बास (बहावलपुर, पाकिस्तान) तक चला जाता है। राज्य के लगभग 60 प्रतिशत भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह प्रणाली का विस्तार हैं।

चम्बल नदी

- चम्बल नदी को राजस्थान की कामधेनु व चर्मण्वती के नाम से जानते है।
- चम्बल नदी का उद्‌भव मध्य प्रदेश में महु के निकट जनापाव की पहाड़ियों से होता है जो कि विंध्य पर्वत श्रेणी का भाग है।
- चम्बल नदी **चौरासीगढ़** के निकट राजस्थान में प्रवेश करती है।
- **यह दक्षिणी पूर्वी राजस्थान** - चित्तौड़गढ़, कोटा, बूँदी, सवाई माधोपुर, करौली व धौलपुर में बहती हुई इटावा (उत्तर प्रदेश) के निकट मुरादगंज के समीप यमुना में मिल जाती है। चम्बल नदी की कुल लम्बाई 1051 किमी. है।
- चूलिया जलप्रताप भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) में स्थित है जिसका निर्माण चम्बल नदी करती है।
- राज्य में सर्वाधिक सतही जल चम्बल नदी में उपलब्ध है तथा बीहड़ भी सर्वाधिक इसी नदी क्षेत्र में हैं।
- चम्बल नदी द्वारा राज्य में सर्वाधिक अवनालिका अपरदन किया जाता है।

चम्बल की सहायक नदियाँ -

- मध्यप्रदेश में मिलने वाली - सीवान, रेतम, शिप्रा।
- राजस्थान में मिलने वाली - आलनिया, परवन, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामनी, कुराल, मेज छोटी काली सिंध आदि बामनी नदी चम्बल में भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट मिलती है।
- पार्वती नदी चम्बल में पालिया (कोटा) नामक स्थान पर मिलती है।
- कालीसिंध नदी चम्बल में नौनेरा (कोटा) नामक स्थान पर मिलती है।
- चम्बल नदी पर चार बाँध बनाए गए है -
  1. गांधी सागर बांध (मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील)
  2. राणा प्रतापसागर बाँध (रावतभाटा, चित्तौड़गढ़)
  3. जवाहर सागर बाँध (बोराबास, कोटा)
  4. कोटा बैराज बाँध (कोटा शहर)

बनास नदी

- बनास नदी को वन की आशा व वर्णशा भी कहते है।
- बनास नदी को राजस्थान की यमुना भी कहते है।
- बनास नदी अरावली की खमनौर की पहाड़ियों से निकलती है। जो कि कुम्भलगढ़ से 5 किमी. कि दूर स्थित है।
- बनास नदी की लम्बाई लगभग 512 किमी. यह पूर्णत: राज्य में बहने वाली सबसे लम्बी नदी है।
- बनास नदी के तट के टोडारायसिंह कस्बे के निकट बीसलपुर बाँध बनाया गया है।
- **सहायक नदियाँ**- बेड़स, कोठारी, खारी, मैनाल, बाण्डी, मानसी ढूंढ, गम्भीरी, और मोरेल है।

बेड़च नदी

- बेड़च नदी का प्राचीन नाम आयड़ नदी है। इसी नदी का उदगम उदयपुर के उत्तर में गोगुन्दा की पहाड़ियों से होता है।
- उदयपुर के निकट यह नदी आयड़ के नाम से जानी जाती है।
- किन्तु उदय सागर से निकलने के पश्चात इसका नाम बेड़च हो जाता है।

- यह चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवाहित होती हुई बीगोंद (माण्डलगढ़-भीलवाड़ा) के निकट बनास में मिल जाती है।
- **सहायक नदियाँ**- गंभीरी, गुजरी, वागन। गंभीरी नदी चित्तौड़गढ़ में बेड़च में मिलती है।

बाणगंगा

- इसका उद्गम जयपुर जिले की बैराठ की पहाड़ियों से होता है।
- इसे अर्जुन की गंगा भी कहा जाता है। इसकी कुल लम्बाई 240 किमी. है।
- राजस्थान की दूसरी नदी बाणगंगा है जो अपना जल सीधे ही यमुना नदी को ले जाती है।
- इस नदी पर जयपुर में जमवा रामगढ़ बांध बना हुआ है।
- इस नदी को ताला नदी के नाम से भी जाना जाता है।

काली सिंध

- इसका उद्गम देवास (मध्य प्रदेश) के पास बागली गाँव की पहाड़ियों से होता है।
- यह नदी झालावाड़ में रायपुर के निकट बिन्दा गाँव से राजस्थान में प्रवेश करती है।
- राजस्थान में यह झालावाड़ तथा कोटा में बहते हुए नौनेरा (कोटा) नामक स्थान पर चम्बल नदी में मिल जाती है।
- **सहायक नदियाँ** - आहु, परवन, निवाज व उजाड़।

पार्वती नदी

- पार्वती नदी मध्य प्रदेश में विंध्य श्रेणी में सीहोर क्षेत्र से निकलकर राजस्थान में यह बांरा में करयाहाट के निकट प्रवेश करती है।
- पार्वती नदी बारां व कोटा में बहती हुई सवाई माधोपुर व कोटा सीमा पर पालिया गांव के निकट चम्बल में मिल जाती है

मेज नदी

- इसका उदगम भीलवाड़ा क्षेत्र से होता है।
- लाखेरी (बूँदी) नामक स्थान यह चम्बल नदी में मिल जाती है।
- मांगली नदी पर ही प्रसिद्ध भीमताल प्रपात है।

गंभीर नदी

- यह बेड़च की सहायक नदी है जो कि मुख्यतया चित्तौड़गढ़ जिले में बहती है।
- इस नदी का उदग्म मध्यप्रदेश में विंध्यांचल की पहाड़ियों से होता है।

बामनी नदी

- इसका उदगम स्थल हरिपुरा (चित्तौड़गढ़) है।
- भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के पास चम्बल में मिल जाती है।

गंभीर नदी

- यह करौली जिले की सपोटरा तहसील की पहाड़ियों से निकलती है।
- यह सवाई माधोपुर, करौली, भरतपुर जिलों में प्रवाहित होती है
- विश्व प्रसिद्ध खानवा का युद्ध इसी नदी के किनारे लड़ा गया था।

कोठारी नदी

- राजसमंद जिले के दिवेर नामक स्थान से निकलती है तथा भीलवाड़ा जिले में बनास में मिल जाती है।
- इस नदी पर मेज बाँध बनाया गया है जो भीलवाड़ा जिले को पयेजल उपलब्ध कराता है।

खारी नदी

- यह राजसमंद जिले के बीजराल गांव के पास की पहाड़ियों से निकलती है तथ देवगढ़ के समीप से होती हुई अजमेर जिले में बहने के पश्चात् देवली (टोंक) के पास बनास नदी में मिल जाती है।

लुनी नदी

- अरावली श्रेणी के नाग पहाड़ (अजमेर) से निकलकर कच्छ के रन में गिरती है।
- इस नदी को साक्री, लवणवती, लवणाद्रि, खारी-मीठी नदी के नाम से भी जाना जाता है।
- यह अजमेर से निकलकर दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर जालौर में बहकर कच्छ के रन में जाकर विलुप्त होती है। इसके उद्गम स्थल पर इसको सागरमती फिर सरस्वती और बाद में लूनी कहते है।
- लूनी नदी का जल बलोतरा तक मीठा है। लेकिन इसके पश्चात् इसका जल खारा हो जाता है।
- जोधपुर के जसंवत सागर बांध (पिचियाक बांध) में पानी की आपूर्ति लूनी नदी से होती है।
- लूनी नदी के बाढ़ के क्षेत्र को जालौर जिले में रेल (नेड़ा) कहा जाता है।
- **सहायक नदियाँ**- लीलड़ी, सूकड़ी, बांडी, मीठड़ी, जोजरी, जवाई, सगाई आदि। दाई और से मिलने वाली एकमात्र सहायक नदी जोजड़ी है।

सागरमती सरस्वती ⟶ लूनी ⟶

माही नदी

- उद्गम स्थल -अममोरू की पहाडियाँ (मध्य प्रदेश) की कुल लम्बाई-576 किमी.
- इसे आदिवासियों की गंगा, वागड़ की गंगा, कांठल की गंगा तथा दक्षिण राजस्थान की स्वर्ण, रेखा कहते है।
- बांसवाड़ा जिले के खांटू ग्राम से राजस्थान में प्रवेश करती है।
- कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- राजस्थान की दूसरी बारहमासी नदी मानी जाती है।
- नावाटापरा (डूंगरपूर) में सोम- माही- जाखम का त्रिवेणी संगम होता है।
- **सहायक नदियाँ** -सोम, जाखम अनास आदि।

सोम नदी

- सोम नदी का उदग्म स्थल उदयपुर जिले के ऋषभदेव के पास बाबलवाड़ा के जंगलों में स्थित बीछामेड़ा की पहाड़ियों से है।
- **सहायक नदियाँ** - जाखम, गोमती, सारनी।

जाखम नदी

- जाखम नदी प्रतापगढ़ जिले में छोटी सादड़ी से निकलती है
- यह धरियावाद के निकट सोम नदी में मिलती है।

साबरमती

- उदयपुर के दक्षिणी-पश्चिमी से निकलकर उदयपुर एवं सिरोही जिलों में प्रवाहित होकर गुजरात में प्रवेश कर खम्भात की में गिरती है।
- यह गुजरात की मुख्य नदी है।
- राजस्थान में इस नदी का अपवाह क्षेत्र न्यूनतम है
- गुजरात का अहमदाबाद शहर इसी नदी के किनारे स्थित है।
- इस नदी के किनारे महात्मा गांधी का साबरमती आश्रम है।
- **सहायक नदियाँ**- बाकल, हथमति, मेश्वा।

पश्चिम बनास

- इस नदी का उद्गम् सिरोही जिले के नया सानावारा गाँव के निकट अरावली की पहाड़ियों से होता है।
- पश्चिमी बनास नदी सिरोही में बहती हुई बनास काँठा जिले (गुजरात) में प्रवेश करती है और फिर लिटिन रन (कच्छ की खाड़ी) में विलुप्त हो जाती है।

सूकड़ी नदी

- सूकड़ी नदी अरावली पर्वत श्रृंखला के पश्चिमी ढाल के देसूरी के निकट से निकलती है।
- पाली और जालौर में प्रवाहित होती हुई बाड़मेर जिले में बहकर समदड़ी के निकट लूनी नदी में मिल जाती है।
- राज्य के 60 प्रतिशत भाग पर आंतरिक प्रवाह प्रणाली पाई जाती है।

कान्तली नदी

- सीकर जिले की खण्डेला की पहाड़ियों से निकलती है।
- इसके पश्चात लगभग 100 किमी. की दूरी तक सीकर, झुंझुनू जिलों में बहती हुई चुरू जिले की सीमा पर विलुप्त हो जाती है।
- कान्तली का बहाव क्षेत्र तोरावाटी कहलाता है।
- कान्तली के किनारे राजस्थान की प्राचीन गणेश्वर सभ्यता विकसित हुई थी।

घग्घर नदी

- घग्घर नदी को मृत नदी भी कहते है।
- इसे नट नदी/हकरा/सौतांग व वैदिक नदी के नाम से भी जाना जाता है।
- इसका उद्गम हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों से कालका नामक स्थान से होता है।
- राजस्थान में यह हनुमानगढ़ जिले की टिब्बी तहसील के तलवाड़ा गांव के पास प्रवेश कर हनुमानगढ़ में बहती हुई भटनेर के पास विलुप्त हो जाती है।
- घग्घर नदी का प्राचीन नाम सरस्वती/ द्रषद्वती है।
- राजस्थान की प्राचीन सभ्यता कालीबंगा इस नदी के किनारे विकसित हुई थी।
- बाढ़ आने की स्थिति में घग्घर नदी **फोर्टअब्बास** पाकिस्तान चली जाती है।

कांकनी/काकनेय नदी

- इसका उद्गम जैसलमेर में लगभग 27 किमी. दक्षिण में कोटरी गांव से होता है।
- कुछ दूरी बहने के बाद यह नदी विलुप्त हो जाती है।
- अच्छी बरसात होने पर यह काफी दूर तक बहती है।
- तब यह नदी मसुरदी के नाम से जानी जाती है तथा **बुझ** झील का निर्माण करती है।

रूपारेल नदी

- इसका उद्गम स्थल अलवर जिल की थानागाजी तहसील उदयनाथ की पहाड़ियाँ से हैं।
- इसे लसवारी नदी भी कहते हैं तथा स्थानीय क्षेत्र में इसे ' वराह नदी' भी कहाँ जाता है।
- यह नदी भरतपुर जिले में समाप्त होती है।

साबी नदी

- यह अलवर जिले के सबसे बड़ी नदी है।
- जयपुर जिले की सेवर पहाड़ियों से निकलकर बानसूर, बहरोड़, मण्डावर, किशनगढ़, तिजारा तहसीलों में बहने के बाद हरियाणा के पटौदी के निकट नजफगढ़ झील में मिल जाती है।

मंथा नदी

- जयपुर जिले के मनोहरपुर से निकलकर सांभर झील में गिरती है।

रूपनगढ़ नदी

- सलेमाबाद (अजमेर) के निकट से निकलकर उत्तर-पश्चिम की ओर बहते हुए सांभर झील में गिर जाती है।

निर्माण कैप्सूल ✍

नदियों के किनारे या संगम पर बने दुर्ग-

गागरोन का किला -आहु व काली सिंध नदी के संगम पर।
भैसरोड़गढ़ दुर्ग - चम्बल व बामानी नदियों के संगम पर
मनोहरथाना दुर्ग - परवन व कालीखाड़ नदियों के संगम पर
शेरगढ़ दुर्ग - परवन नदी के किनारे।
गढ़ पैलेस कोटा दुर्ग - चम्बल नदी के किनारे।
चित्तौड़गढ़ दुर्ग- गंभीरी और बेड़च नदियों के संगम स्थल के निकट पहाड़ी पर।
सुवर्णगिरि दुर्ग - जालौर (यह सूकड़ी नदी के किनारे स्थित है)

नदियों में या उनके निकट स्थित अभ्यारण्य :

राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभ्यारण्य-चम्बल नदी
जवाहर सागर अभ्यारण्य-चम्बल नदी
शेरगढ़ अभ्यारण्य (बाराँ)-परवन नदी
बस्सी अभ्यारण्य(चित्तौड़गढ़)-ओरई व बामनी (ब्राह्मणी) नदियों का उद्गम
भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)-चम्बल व बामनी का संगम
फुलवारी की नाल- मान्सी, वाकल व सोम नदी

नदियों के त्रिवेणी संगम स्थल :

बनास-मेनाल-बेड़च-मेनाल (भीलवाड़ा)
माही-जाखम-सोम-बेणेश्वर (डूँगरपुर)
बनास-चम्बल-सीप- रामेश्वर घाट (स. माधोपुर)

नदियों पर बसे प्रमुख नगर :

चम्बल-कोटा, रावतभाटा, केशवरायपाटन।
जवाई-सुमेरपुर (पाली), शिवगंज (सिरोही)
बेड़च-चित्तौड़गढ़
खारी-आसींद, गुलाबपुरा, विजयनगर, (भीलवाड़ा)
बांडी-पाली
कालीसिंध-झालावाड़
प. बनास-डीसा (गुजरात)
लूनी-बालोतरा (बाड़मेर)
साबरमती-गाँधीनगर (गुजरात)
चन्द्रभागा-झालरापाटन
बनास-नाथद्वारा, टोंक
सूकड़ी-जालौर
घग्घर-अनूपगढ़, हनुमानगढ़

राजस्थान की झीलें

मीठे पानी की प्रमुख झीलें

जयसमंद (ढेबर झील)

- उदयपुर जिले में गोमती नदी पर स्थित राजस्थान की मीठे पानी की सबसे बड़ी व विश्व की द्वितीय बड़ी कृत्रिम झील है।
- इसका निर्माण 1687-91 में जयसिंह द्वारा करवाया गया था।
- इस झील में कुल सात टापू है। जिनमें भील व मीणा रहते हैं।
- सबसे बड़ा टापू बाबा का भागड़ा और सबसे छोटा टापू प्यारी है।
- श्यामपुरा नहर व भाट नहर इस झील से सिंचाई के लिए निकाली गई प्रमुख नहरें है।
- इस झील पर आइसलैण्ड रिसोर्ट नामक होटल बनाया गया है।

राजसमंद झील

- यह झील राजसमंद जिले में स्थित है।
- इस झील का निर्माण 1662-1680 ई. में महाराणा राजसिंह द्वारा करवाया गया था।
- इस झील के उत्तरी भाग नौ चौकी में संगमरमर के 25 शिलालेखों पर संस्कृत भाषा में मेवाड़ का इतिहास लिखा है।
- रणछोड़ भट्टा द्वारा लिखित यह विश्व की सबसे बड़ा शिलालेख है।
- इस झील में गोमती नदी का पानी आकर गिरता है।
- इस झील के तट पर विश्व प्रसिद्ध पुष्टि प्रधान वैष्णव अराध्य धाम श्री द्वारकाधीश का वैभवशाली मंदिर स्थित है।
- यहाँ घेवर माता का प्रसिद्ध मंदिर है।

पिछोला झील

- राणा लाखा के समय 14 वीं सदी में इस झील निर्माण एक बनजारे द्वारा करवाया गया था।
- उदयपुर में स्थित इस झील के दो टापूओं पर जगमंदिर और जगनिवास दो महल बने है।
- यह लिंक नहर के द्वारा फतेहसागर झील से जुड़ी है।
- नटनी का चबुतरा पिछोला झील के किनारे स्थित है।

फतेहसागर झील

- उदयपुर में स्थित इस झील का निर्माण 1988 में महाराणा जयसिंह ने कराया।
- इसका पुनर्निर्माण महाराणा फतेह सिंह ने 1888 में करवाया।
- इसी कारण इसे फतेहसागर झील कहते है।
- इस झील में एक टापू है जिस पर नेहरू उद्यान विकसित किया गया है। इस झील में सौर वैद्यशाला स्थापित की गई है जिसके द्वारा सूर्य की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

आनासागर झील (बाड़ी नदी पर निर्मित)

- पृथ्वी राज चौहान के पितामह आनाजी/अर्णोराज द्वारा 1137 ई. में निर्मित यह झील अजमेर में स्थित है।
- जहाँगीर ने यहाँ एक उद्यान 'दौलतबाग' बनवाया जिसे अब'सुभाष उद्यान कहा जाता है।
- शाहजहाँ ने संगमरमर की 'बारहदरी' का निर्माण करवाया जिसमें संगमरमर के 12 दरवाजे हैं।

पुष्कर झील

- यह झील अजमेर से 11 किमी दूर पुष्कर में स्थित है।
- यह प्राकृतिक झील है तथा धार्मिक दृष्टि से पवित्र झील है।
- राजस्थान के इन प्रसिद्ध सरोवर के किनारे ब्रह्माजी का सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर है।
- यहाॅ प्रतिवर्ष कार्तिक माह में प्रसिद्ध मेला लगता है।
- पुष्कर को पंचम तीर्थ भी कहते है।
- वेद व्यास ने इसी झील के किनारे महाभारत की रचना की थी।
- इस झील के किनारे मैडम मैरी के द्वारा महिला घाट का निर्माण करवाया गया। जहाँ महात्मा गांधी की अस्थियां विसर्जित की गई इसलिए वर्तमान में उसे गांधीघाट के नाम से जाना जाता है।
- भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इसे ज्वालामुखी निर्मित झील माना जाता है।
- इसी झील के किनारे विश्वामित्र ने तपस्या की थी जिसे इन्द्र की अप्सरा मेनका ने भंग किया था।
- ब्रह्माजी के मंदिर को वर्ष 2006 में राष्ट्रीय स्मारक के रूप में घोषित किया।

बालसमंद झील

- जोधपुर में स्थित इस झील का निर्माण सन् 1159 में परिहार शासक बालक राव ने करवाया था।

फॉयसागर झील

- अजमेर में स्थित इस झील का निर्माण अंग्रेज इंजीनियर फॉय के निर्देशन में बाढ़ राहत परियोजना के तहत 1891-92 में करवाया गया।

सिलीसेढ़ झील

- अलवर जिले में स्थित इस झील निर्माण 1845 में महाराजा विनय सिंह ने करवाया।
- महाराजा विनय सिंह ने अपनी रानी हेतु एक शाही महल बनवाया जो आजकल लेक पैलेस होटल के नाम से जाना जाता है।

कोलायत झील

- बीकानेर में स्थित यह झील कपिलमुनि का आश्रम होने के कारण प्रसिद्ध है।
- इसे शुष्क मरूस्थल का सुंदर मरू उद्यान कहा जा सकता है।
- कार्तिक माह की पूर्णिमा को यहाँ प्रसिद्ध मेला लगता है।

कायलान झील

- जोधपुर में स्थित इस झील द्वारा जोधपुर शहर की पेयजल आपूर्ति का कार्य किया जाता है।
- इसे वर्तमान स्वरूप महाराजा प्रताप सिंह के द्वारा प्रदान किया गया।
- दो पहाड़ियों के मध्य स्थित यह झील जोधपुर की सबसे सुंदर झील है। इस झील के किनारे देश का प्रथम मरू वानस्पतिक उद्यान **(माचिया सफारी पार्क)** का निर्माण किया गया है।

उदयसागर झील

- महाराणा उदयसिंह ने 1559-1565 के बीच निर्माण करवाया।
- उदयपुर स्थित इस झील में बेड़च नदी का पानी रोका गया है।

नक्की झील

- सिरोही जिले में स्थित राजस्थान की सबसे ऊँचाई पर स्थित झील है जो माउण्ट आबू पर्वत पर स्थित है।
- पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण देवताओं ने अपने नाखुनों से किया था।

- इस झील के पास पहाड़ी में हाथी गुफा स्थित है।
- नक्की झील के किनारे की पहाड़ियों के बीच रामकुण्ड के नीचे सोलहवीं शताब्दी का रघुनाथ जी का मंदिर स्थित है।

खारे पानी की झीलें

- राजस्थान की खारे पानी की झीलें प्रमुख नमक स्त्रोत है।
- ये खारे पानी की झीलें टेथिस सागर का अवशेष मानी जाती है।

1. सांभर झील-

- जयपुर जिले की फुलैरा तहसील में सांभर झील स्थित है।
- यह राज्य की सबसे बड़ी खारे पानी की नमक उत्पादक झील है।
- इस झील के प्रवर्तक चौहान शासक वासुदेव को माना जाता है।
- भारत के कुल नमक उत्पादन का 8.7 प्रतिशत नमक का उत्पादन यहीं होता है।
- इसमें मंथा, रूपनगढ़, खारी, खण्डेला नदियाँ आकर गिरती है हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड द्वारा इस झील से उत्पादन का कार्य किया जाता है।
- यह जयपुर, नागौर व अजमेर की सीमा को स्पर्श करती है।
- इसके किनारे सांभर माता का मंदिर, संत हिस्सादुददीन की दरगाह स्थित है।
- इस झील को लोकतीर्थ देवयानी कहते हैं।

2. पचपदरा झील-

- यह झील बाड़मेर के बालोतरा के पास पचपदरा (पचभद्रा) नामक स्थान पर स्थित है।
- यहाँ खारवाल जाति के लोग मोरली झाड़ी की टहनियाँ का उपयोग नमक के स्फटिक बनाने में करते हैं।
- यहाँ उत्तम किस्म का नमक तैयार होता है जिसमें 98 प्रतिशत तक सोडियम फ्लोराइड की मात्रा पाई जाती है।
- वर्तमान में रिफाईनरी स्थापना के कारण चर्चा में।
- श्रीमती सोनिया गांधी ने 22 सितम्बर 2013 को पचपदरा के साजियावाली गांव में रिफाईनरी का शिलान्यास किया।

3. लूणकरणसर झील-

- बीकानेर से लगभग 80 किमी. दूर लूणकरणसर में यह झील स्थित है।
- इस झील से नमक बहुत कम बनाया जाता है।

4. डीडवाना झील-

- नागौर जिले में डीडवाना नगर के निकट यह नमकीन पानी की झील है।
- यहाँ का नमक खाने के अयोग्य होता है।
- यहाँ निजी क्षेत्र में नमक बनाने वाली संस्थाओं का देवल कहा जाता है।
- यहाँ राज्य सरकार का उपक्रम राजस्थान स्टेट कैमिकल वर्क्स स्थापित है।
- इस झील में सोडियम लवण के निर्माण हेतु सोडियम सल्फेट संयंत्र स्थापित है।
- यहाँ के नमक में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने के कारण यह खाने योग्य नहीं है इसका उपयोग कागज उद्योग में होता है।

खारे पानी की अन्य झीलें

झील	स्थान	झील	स्थान
कावोद	जैसलमेर	तालछापर	चुरू
रैवासा	सीकर	फलौदी	जौधपुर
डेगाना, कुचामन	नागौर		

मीठे पानी की अन्य झीलें

गजनेर	बीकानेर	पीथमपुरी	सीकर
दुगारी, नवलखा झील	बूँदी	मानसरोवर	झालावाड़
तलवाड़ा झील	हनुमानगढ़	घड़सीसर झील	जैसलमेर
बुड्ढ़ा जोहड़ झील	गंगानगर	बीसलपुर बांध	टोंक

निर्माण कैप्सूल ✍

- **लिटिन रन:** कच्छ की खाड़ी के क्षेत्र का मैदान।
- राजस्थान में भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर और डूँगरपुर में नदियों के त्रिवेणी संगम है।
- उदयपुर की पिछोला झील को भरने वाली सीसारमा एवं बुझड़ा नदी है।
- खेतड़ी (झुंझुनू) में पन्नालाल शाही का तालाब सेठ पन्नालाल शाह ने 1870 में बनवाया था। स्वामी विवेकानंद जब खेतड़ी आए थे तो उन्हें इसी तालाब के किनारे बने आवास में ठहराया गया था।
- कनाड़ा द्वारा पुष्कर झील में GAAP परियोजना के तहत सफाई कार्य किया जा रहा है।
- मावठा नामक झील आमेर में स्थित है।
- वाटर सफारी से संबंधित नदी चंबल है। चंबल भारत की एकमात्र नदी है जो जैव विविधता और नैसर्गिक सौंदर्य के बलबूते पर यूनेस्कों की विश्व धरोहर में शामिल होने का दावा करती है।
- राजस्थान में भूगर्भ में बहने वाली पानी के मार्ग को सीर कहते हैं।
- चौपड़ा झील पाली जिले में स्थित है।
- प्रसिद्ध जाट शासक महाराजा सूरजमल द्वारा निर्मित सुजानगंगा नहर है। जो लोहागढ़ दुर्ग के चारों ओर अवस्थित है।
- एशिया का चिनाई वाला सबसे ऊँचा बांध जाखम बाँध है।
- भीलवाड़ा जिले में मेजा बांध की पाल पर विकसित किए गए मेजा पार्क को ग्रीन माउण्ट कहा जाता है।
- मत्स्य बीज उत्पादन के लिए शुष्क बांध प्रजनन केन्द्र 'रावजी की तलाई उदयपुर' जिले में हैं।
- तरूण भारत संघ के सहयोग से अलवर के भावता गांव में सांकड़ा बांध बनाया गया है।

जिलेवार बाँध, झीलें व तालाब

1.	**अजमेर**	आनासागर, नारायणसागर, लसाड़िया, वसुन्दनी, फॉयसागर, फूलसागर, शिवसागर, रामसर, बूढ़ा पुष्कर, गूंदोलाव तालाब (किशनगढ़) अजगरा, लोरड़ी सागर।
2.	**अलवर**	जयसमन्द, मंगलसर, सिलिसेढ़, जयसागर, देवती, हरसौरा, विजयसागर, बावरिया
3.	**भरतपुर**	बंध बैरठा, अजान, लालपुर, मोती झील, सेवर, सीकरी, अवार सागर।
4.	**बूँदी**	नवलखा झील, नवलसागर, जैतसागर, जिगजैन बाँध (लाखेरी), गुढ़ा, बरधा, बूँदी का गोथड़ा, भीमलत, पाईवालापुरा, अभयपुरा, चाकण, गरदढ़ा।
5.	**बाराँ**	गोपालपुरा, बिलास, रताई, कालीसोत, इकलेरा, छत्तरपुरा, बैंथली, परवन लिफ्ट, ल्हासी, खिरिया, सेमलीफाटक।
6.	**भीलवाड़ा**	अडवान, नाहर सागर, मेजा, सरेरी, अरवंर, खारी, जैतपुरा, पार्वती सागर।
7.	**बाँसवाड़ा**	माही बजाज सागर, बोरावनगढ़ी।
8.	**बाड़मेर**	पचपदरा
9.	**बीकानेर**	अनूपसागर, सूरसागर, कोलायत, लूनकरणसर।
10.	**चित्तौड़गढ़**	गंभीरी, वागन, ओराई, बस्सी, भूपालसागर, बड़गांव, पिण्ड, बांगदारी, सिंहपुर।
11.	**डूँगरपुर**	गैबसागर, लाडीसर, सोम-कमला-अम्बा।
12.	**दौसा**	माधोसागर बाँध, कालखसागर, सैथलसागर, झिलमिली, मोरेल, देवांचली
13.	**धौलपुर**	रामसागर, उर्मिलासागर, पार्बती
14.	**जयपुर**	मानसागर, देवयानी, छापरवाड़ा, घितौली, बुचारा, सांभर झील, पंच पहाड़ी
15.	**झुंझुनूँ**	पन्नालाल शाह तालाब (खेतड़ी) समय तालाब, फतेहसागर तालाब, पिलानी का बिड़ला तालाब, अजीत सागर बाँध।
16.	**झालावाड़**	भीमसागर (खानपुर तहसील के ग्राम मऊ बोरदा के निकट उजाड़ नदी पर निर्मित) बंसखेड़ी, डोबरा, छापी, चोली, पृथ्वीपुरा, चैलिया, रेवा, भीमणी, गुलंडी, कालीखाड़, कनवाड़ा, पिपलाद, गागरिन
17.	**जोधपुर**	कायलाना (सर प्रताप द्वारा निर्मित), उम्मेद सागर, प्रताप सागर, कैलाबा, जसवन्तसागर, बालसमन्द।
18.	**जालौर**	बाँकली।
19.	**जैसलमेर**	गढीसर, अमरसागर, बुझ झील
20.	**कोटा**	कोटा बैराज (कोटा बाँध), जवाहर सागर बाँध, किशोर सागर तालाब (छतरविलास तालाब),सूरसागर,आलनिया(लाडपुरा, कोटा), सावनभादों (सांगोद, कोटा), हरिशचन्द्रसागर बाँध, किशनपुरा, लिफ्ट, आवाँ, लाडपुरा, दाताँ, तकली, नारायण खेड़ा।
21.	**करौली**	पाँचना, कालीसिल, खिरखिरी, नींदर, मामचारी, जगर, बिशनसमंद
22.	**नागौर**	कुचामन झील, डीडवाना झील
23.	**पाली**	हेमावास, सरदारसमंद, सेई, जवाई, खारदा, रायपुर, लूनी, मीठड़ी, बानियावास, राजसागर
24.	**राजसमंद**	राजसमंद, नंदसमंद अगरिया
25.	**सिरोही**	पश्चिमी बनास, ओरा टैंक, अंगोर, नेवारा
26.	**सवाई माधोपुर**	मोरेल, सूरवाल, ढील, पांचोलास, गलाई सागर, बिनोरी सागर, भगवतगढ़, मानसरोवर
27.	**टोंक**	गलवा, माशी, टोरडी सागर, चांद सेन, मोतीसागर, गलवानिया, बीसलपुर बांध।
28.	**उदयपुर**	उदयसागर, स्वरूपसागर, दूधतलाई, जयसमंद झील, सोम, कागदर, फतेहसागर झील, डाया, बड़ी टैंक, पिछोला, मामेर, रोहिणी।
29.	**प्रतापगढ़**	जाखम बाँध, जल सागर, भँवर सेमला।

राजस्थान में सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएँ

- **राज्य में सिंचाई के प्रमुख साधन -**
  1. नलकूप व कुआं - 66 प्रतिशत,
  2. नहर - 31 प्रतिशत,
  3. तालाब-12 प्रतिशत,4. अन्य साधान -1.4 प्रतिशत।
- कुओं व नलकूपों से सर्वाधिक सिंचाई जयपुर जिले में होती है।
- नहरों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई गंगानगर जिले में होती है।
- तालाबों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई भीलवाड़ा जिले में की जाती है।
- राज्य में झरनों में सर्वाधिक सिंचाई बांसवाड़ा जिले में होती है।
- राजस्थान में सर्वाधिक सिंचाई क्रमशः गंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में तथा न्यूनतम राजसमंद जिले में होती है।
- सिंचित क्षेत्र के प्रतिशत के आधार पर चुरू जिले में सबसे कम सिंचित क्षेत्रफल है।

राजस्थान की प्रमुख नहर एवं सिंचाई परियोजनाएं

1. गंग नहर

- राजस्थान में वर्षा के अभाव को दूर करने के लिए तत्कालीन महाराजा श्री गंगा सिंह (बीकानेर) ने गंगनहर का निर्माण करवाया था।
- 26 अक्टूबर, 1927 को गंगनहर का उद्घाटन किया था।
- महाराजा गंगसिंह ने 1927 में गंगनहर का निर्माण करवाया था।
- यह नहर पंजाब के फिरोजपुर जिले के हुसैनीवाला नमक स्थान से सतलज नदी से निकलती है।
- गंगनहर की कुल लम्बाई 292 किमी. है।
- गंगनहर गंगानगर जिले में खक्खा के पास प्रवेश करती है।
- इसकी मुख्य शाखाएँ: लक्ष्मीनारायण जी, लालगढ़ करणजी और समिया।
- यह नहर गंगानगर को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराती है।

2. गंगनहर लिंक चैनल-

- गंगनहर लिंक चैनल का उदगम हरियाणा में लौहगढ़ नामक स्थान से होता है।
- साधुवाली के निकट गंगनहर लिंक चैनल को गंगनहर से जोड़ा गया है।
- इसकी लम्बाई 80 किमी है।
- लिंक चैनल के निर्माण का उद्देश्य जर्जर हो चुके गंगनहर के पुनर्निर्माण के दौरान श्रीगंगानगर जिले में सिंचाई एवं पीने के पानी आवश्यकता पूरा करना है।

3. भरतपुर नहर-

- भरतपुर नहर का उदघाटन 1960 में हुआ परन्तु यह नहर 1963-64 में बनकर पूर्ण हुई।
- यह पश्चिमी यमुना नगर से निकाली गई है। यह राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र को सींचती है।

4. गुडगांव नहर-

- गुडगांव नहर 1985 में शुरू की गई थी। यह हरियाणा तथा राजस्थान की संयुक्त परियोजना है।
- भरतपुर की डीग तथा कामां तहसील में सिंचाई का कार्य किया जाता है।
- यह नहर यमुना नदी से ओखला के निकट से निकाली गई है।
- भरतपुर जिले की कामां तहसील में जुरहरा गांव के पास यह नहर राजस्थान में प्रवेश करती है।
- इस नहर का नाम वर्तमान में यमुना लिंक नहर परियोजना का दिया है।

5. इंदिरा गांधी नहर परियोजना -

- इंदिरा गांधी नहर परियोजना राजस्थान की ही नही बल्कि भारत की प्रमुख सिंचाई परियोजना है।
- इंदिरा गांधी नहर परियोजना जिसे प्रारम्भ में 'राजस्थान नहर' के रूप से प्रारम्भ किया गया था। यह अपने आकार, विस्तार, सिंचाई, क्षमता एवं क्षेत्रीय विकास में योगदान की दृष्टि से विश्व की वृहद् परियोजना की श्रेणी में आती है।
- इस परियोजना को राज्य की मरूगंगा, मरूस्थल की जीवनरेखा व प्रदेश की जीवनरेखा भी कहॉ जाता है।
- **पूर्व नाम :** राजस्थान नहर परियोजना।
- 2 नवम्बर, 1984 को इसका नाम इंदिरा गांधी नहर परियोजना रखा गया।
- इंदिरा गांधी नहर के प्रणेता इंजीनियर श्री कंवरसेन है।
- उद्गम स्थल: पंजाब में सतलज- व्यास नदियों के संगम पर बने हरिके बैराज बांध से हुआ है।
- इंदिरा गांधी नहर परियोजना का शिलान्यास 31 माच1958 को तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री स्व. श्री गोविन्द वल्लभ पंत ने किया ।
- उद्देश्य : रावी एवं व्यास के जल से राजस्थान का आवंटित 86 MAF पानी में से 7.59 MAF पानी का उपयोग कर पश्चिमी राजस्थान में सिंचाई एवं पेयजल सुविधाओं का विस्तार करना, मरूस्थलीकरण को रोकना, वृक्षारोपण तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना है।
- इस परियोजना से राज्य के आठ जिले लाभांवित हो रहे है-
- श्री गंगानगर, चूरू, हनुमानगढ़, नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर।
- इंदिरा गांधी नहर की कुल लम्बाई 649 किमी है।
- इंदिरा गांधी नहर के दो भाग है :-

  1. राजस्थान ीडर, 2. मुख्य नहर ।
- इंदिरा गांधी नहर से 7 लिफ्ट नहरें निकाली गई हैं-

  वन सेना: नहर परियोजना क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्य करने के लिए वन सेना गठित की गई है।

  सेम समस्या: इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में जल उत्पादन से यह समस्या बढ़ती जा रही है। इसके निवारण के लिए जिप्सम का प्रयोग किया जा रहा है।
- 1998 से जापान की ओ.ई.सी.एफ. संस्था के आर्थिक सहयोग से वनारोपण व चारागाह विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है।
- **नहर का अंतिम बिन्दु :** गडरारोड़ (बाड़मेर)।
- **नहर पर ऊर्जा उत्पादन केन्द्र:** पँगल, बिरसलपुर, चारणवाला।
- **लिफ्ट नहरों की संख्या :** 7(2 निर्माणधीन)
- **सबसे लम्बी लिफ्ट नहर:** कंवरसेन लिफ्ट नहर (151.64 किमी.) सबसे पहले बनने वाली लिफ्ट नहर

6. चंबल परियोजना

- यह राजस्थान तथा मध्यप्रदेश की संयुक्त परियोजना है।
- राजस्थान की बारहमासी व सबसे बड़ी नदी चम्बल पर यह परियोजना 1953-54 में प्रारम्भ की गई।
- इस परियोजना में राजस्थान व मध्यप्रदेश की साझेदारी 50:50 की है।
- केन्द्रीय जल शक्ति बोर्ड ने 1950 में इस योजना को स्वीकृत किया था।

चंबल नदी घाटी परियोजना के अंतर्गत निम्न बांध आते हैं-

1. **गांधी सागर बांध** - गांधी सागर बांध का निर्माण मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा तहसील में स्थित चौरासीगढ़ दुर्ग से 8 किमी. दूर किया गया है।
2. **राणा प्रतापसागर बांध** - राणा प्रताप सागर बांध का निर्माण चम्बल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा नामक स्थान पर किया गया।

- भराव क्षमता की दृष्टि से सबसे बड़ा बांध।
- बांध का निर्माण 1970 में पूरा हो गया। फरवरी, 1970 को इसे राष्ट्र को समर्पित किया गया।
- कनाड़ा के सहयोग से राणा प्रताप सागर बांध पर परमाणु बिजली घर की स्थापना की गई है।
- वर्तमान में इसकी चार इकाईयां कार्यरत है।

3. **जवाहर सागर बाँध (कोटा बांध)**-यह कोटा बैराज से 16 किमी. दूर बोरावास गांव के निकट है तथा राणा प्रताप सागर बांध से 33 किमी. दूर है।

- यह एक पिकअप बांध है।
- इस बांध का निर्माण 1972 में हुआ।

4. **कोटा बैराज** - कोटा सिंचाई बांध का निर्माण कोटा नगर के निकट चंबल नदी पर 1954 में किया गया, जिसे 'कोटा बैराज' के नाम से जाना जाता है।

- इस बांध से दोनों और सिंचाई हेतु नहरें निकाली गई है।
- कृषि ड्रेनेज अनुसंधान परियोजना (राजाड़): यह परियोजना कनाड़ा की अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी के सहयोग से चम्बल कमांड क्षेत्र में चलाई जा रही है।

7. भाखड़ा नांगल परियोजना-

- यह पंजाब हरियाणा व राजस्थान की संयुक्त परियोजना है।
- भाखड़ा नांगल परियोजना में राजस्थान का हिस्सा 15.22 प्रतिशत है।
- यह भारत की सबसे बड़ी नदी घाटी परियोजना है। इसे जवाहर लाल नेहरू ने चमत्कारी विराट वस्तु कहा।
- सर्वप्रथम सतलज नदी पर बांध बनाने का विचार तत्कालीन राज्यपाल लुईसडेन ने 1909 में प्रकट किया।
- भाखड़ा नांगल परियोजना में सतलज नदी पर भाखड़ा एवं नागल स्थानों पर दो बांध बनाए गए है।
- **भाखड़ा बांध** - यह बांध एशिया का सबसे ऊँचा बांध है। यह कंक्रीट निर्मित गुरूत्व सीमा बांध (Concrete gravity straight Dam) है।
- भाखड़ा बांध सतलज नदी पर हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में बनाया गया है।
- इसकी लम्बाई 518 मीटर व चौड़ाई 226 मीटर है।
- नांगल बांध - रोपड़ (पंजाब)
- **नहरे :** नरवाना नहर, सरहिन्द नहर, विस्तदोआब नहर।
- भाखड़ा नांगल परियोजना से सर्वाधिक सिंचाई हनुमानगढ़ जिले में होती है तथा चूरू, गंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, झुंझुनू व बीकानेर जिलों को विद्युत प्राप्त होती है।

8. यास परियोजना-

- इस परियोजना में सतलज, रावी व व्यास नदियों के जल का उपयोग होता है।
- यह राजस्थान, पंजाब व हरियाणा की संयुक्त परियोजना है।
- व्यास नदी पर हिमाचल प्रदेश में निम्न दो बांध (1) पंडोह बांध (2) पांग बांध बनाए गए है।
- पोंग बांध का मुख्य उद्देश्य इंदिरा गांधी परियोजना को जेल की आपूर्ति करना है।
- व्यास-सतलज लिंक परियोजना (BSLP)
- भाखड़ा नांगल बांध में पानी की आपूर्ति बनाए रखने एवं व्यास नदी के जल का उपयोग करने हेतु बांध से यह लिंक नहर निकाली गई है।
- **इराडी आयोग :** रावी-व्यास नदी के जल-विवाद के हल हेतु राजीव-संत लोगोवाल समझौते के तहत 1986 में न्यायाधीश इराड़ी की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया गया है।

9. माही बजाज सागर परियोजना -

- यह राजस्थान व गुजरात की संयुक्त परियोजना है। जिसमें क्रमशः 45 प्रतिशत व 55 प्रतिशत हिस्सा है।
- यह एक जलविद्युत परियोजना भी है।
- माही नदी पर बांसवाड़ा के निकट बोरखड़ा गांव में माही बजाज सागर बांध तथा गुजरात में कड़ाना बांध बनाया गया है।
- इस परियोजना ने बांसवाड़ा जिले के आदिवासी क्षेत्रों को लाभ पहुंच रहा है।

10. जवाई बांध योजना -

- पाली जिले में जवाई नदी पर स्थित है।
- इस बांध का निर्माण जोधपुर नरेश उम्मेदसिंह ने 1946 में करवाया था।
- इंजीनियर एडगर व फर्गुसन की देखरेख में इस बांध का निर्माण हुआ।
- जवाई बांध को ' मारवाड़ का अमृत सरोवर ' कहा जाता है।
- इससे जालौर व पाली जिलों में सिंचाई की जाती हैं। तथा जोधपुर व पाली जिलों को पेयजल सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

11. सेई परियोजना

- जवाई बांध में पानी की कमी को दूर करने के लिए राज्य सरकार ने 'सेई परियोजना' का निर्माण उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील में करवाया है।

12. ओराई परियोजना -

- ओराई बांध चित्तौड़गढ़ बूँदी सड़क मार्ग पर भोलापुरा गांव के निकट बनाया गया है।
- इससे चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिले को सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

13. जाखम परियोजना -

- 1962 में जाखम परियोजना का प्रारम्भ जाखम नदी पर प्रतापगढ़ जिले के अनूपगढ़ गांव के निकट जाखम बांध बना कर किया गया
- **उद्देश्य** - प्रतापगढ़ और धरियाबाद तहसिलों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करना।
- इस परियोजना से आदिवासी क्षेत्रों में सिंचाई व पेयजल उपलब्ध होता है।

ईसरदा बांध

- यह बांध बनास नदी पर बनाया गया है एवं टोंक व सवाई माधोपुर जिलों की सीमा पर स्थित है।

सिद्धमुख नोहर सिंचाई परियोजना:

- इस परियोजना में रावी तथा व्यास नदियों के अतिरिक्त जल का उपयोग किय जा रहा है।
- इस परियोजना से हनुमानगढ़ जिले की नोहर व भादरा तथा चुरू जिले की राजगढ़ व तारानगर तहसीलों को जल प्राप्त होता है।
- यह योजना यूरोपियन आर्थिक समुदाय के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ की गई ।

- इस परियोजना का शिलान्यास स्व. राजीव गांधी द्वारा 4 अक्टूबर 1989 को भिरानी गांव के समीप किय गया ।
- वर्तमान में इस परियोजना का बदल कर राजीव गांधी नहर परियोजना कर दिया गया है।

नर्मदा परियोजना

- यह गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व राजस्थान की संयुक्त परियोजना है।
- इस जल के उपयोग हेतु सरदार सरोवर बांध (गुजरात) से नर्मदा नहर नहर निकाली गई है नर्मदा नहर का पानी राजस्थान के जालौर जिले की साँचौर तहसील के सील गाँव के निकट बने जीरो प्वाइंट तक 18 मार्च 2008 को पहुंच गया।
- श्रीमती वसुंधरा राजे (तत्कालीन मुख्यमंत्री) द्वारा 27 मार्च, 2008 को एक भव्य समारोह के नर्मदा नहर के पानी को लालपुर (सांचौर) में प्रवेश कराया गया।
- इस परियोजना से जालौर की सांचौर तहसील तथा बाड़मेर में सिंचाई होगी।।

बीसलपुर परियोजना

- बीसलपुर बांध बनास नदी पर टोंक जिले के टोडा रायसिंह कस्बे से 13 किमी. दूर बीसलपुर गांव के निकट बनाया गया है।
- **उद्देश्य :** टोंक, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, किशनगढ़, नसीराबाद, केकड़ी, सरवाड को पेयजल की आपूर्ति कराना है।
- बीसलपुर परियोजना एक बहुउद्देशीय परियोजना है।
- बीसलपुर परियोजना के लिए नाबार्ड के ग्रामीण आधार ढाँचा विकास कोष (RIDF) के आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है।
- जयपुर शहर को पेयजल उपलब्ध कराने हेतु सूरजपुरा (टोंक) से बालावाला गांव (सांगानेर-जयपुर) तक पाइप लाईन डाली जा रही है।

पांचना परियोजना:

- यह परियोजना करौली जिले में स्थित है।
- इस परियोजना में करौली जिले के गुडला गांव के निकट पांच छोटी नदियों- भद्रावती, बरखेड़ा, अटा, भैंसावट तथा माची के संगम पर मिटटी का बांध बनाया गया है।

चूलीदेह परियोजना

पांचना बांध की पूर्ण भराव की दशा में करौली शहर को डूबने से बचाने हेतु यह परियोजना बनाई गई।

इंदिरा लिफ्ट सिंचाई परियोजना

सवाईमाधोपुर जिले में स्थित यह परियोजना जिले की सबसे बड़ी परियोजना है।

सोम-कमला-अम्बा परियोजना

- इस परियोजना का निर्माण डँगरपुर जिले में किया गया है।
- **उद्देश्य :** आदिवासी क्षेत्रों में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना जाखम परियोजना तथा सोम-कमला-अम्बा दोनों ही आदिवासी क्षेत्रों हेतु विकसित की गई।

सुजलम परियोजना :

बाड़मेर जिले में खारे पानी को मीठे पानी में बदलने हेतु यह परियोजना चलाई जा रही है। यह परियोजना भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र एवं जोधपुर स्थित रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला के संयुक्त प्रयासों से चलाई जा रही है।

सोम कागदर सिंचाई परियोजना :

इस परियोजना का निर्माण उदयपुर जिले में किया गया है।

बांध बारैठा

भरतपुर के महाराजा रामसिंह के कार्यकाल में सन 1897 में कुकुन्द नदी को दो पहाड़ों के बीच रोककर इस बांध का निर्माण करवाया गया है।

जोधपुर लिफ्ट नहर

भदासर से जोधपुर तक की राज. कृषिगत अनुसंधान ड्रेनेज प्रोजेक्ट परियोजना चम्बल कमाण्ड क्षेत्र में कनाड़ा की अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था द्वारा चलाई गई है।

विलास सिंचाई परियोजना

यह बाराँ जिले की परियोजना है। इसमें बारों जिले के मानगढ़ गांव के पास एक बांध बनाया गया है।

चाकण सिंचाई परियोजना

यह बूँदी जिले की परियोजना हैं इसमें केशोरायपाटन तहसील (बूँदी) में गुड़गांव के नजदीक चाकण नदी पर बांध बनाया गया है।

छापी सिचांई परियोजना

झालावाड़ जिले में अकलेरा के निकट परवन नदी पर स्थित है।

पीपलदा लिफ्ट सिंचाई योजना

श्रीमाधोपुर जिले की खण्डार तहसील के 34 गांवों की कुल 12930 हैक्टेयर कृषि भूमिका सिंचित करने के लिए प्रस्ताविक परियोजना।

बैथली

नाबार्ड की आर्थिक मदद से बारां जिले के नियमानुसार गांव के निकट बैथली नदी पर इस परियोजना का निर्माण किया गया।

मानसी बाकल परियोजना

- इस परियोजना के अंतर्गत उदयपुर के निकट मानसी वाकल नदी पर गोराजा गांव (झाडोल तहसील) में एक बांध बनाया गया।
- इस परियोजना के अंतर्गत 4.6 किमी. लम्बी सुरंग से पानी अलसीगढ़ बांध से पिछोला झील तक लाया जाता है।
- मानसी वाकल जल सुरंग देश की सबसे बड़ी जल सुरंग है।

गंभीरी योजना

इस योजना के अंतर्गत सन् 1956 में निम्बाहेड़ा तहसील में मोथा और आर्निया के समीप गंभीर नदी पर मिटटी से निर्मित बांध बनाया गया है।

पश्चिमी बनास योजना

सिरोही जिले के पिंडवाड़ा तहसील के स्वरूपगंज गांव के निकट पश्चिमी बनास नदी पर निर्मित परियोजना।

राज्य की मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ

1.	भीम सागर परियोजना	-	झालावाड़
2.	छापी परियोजना	-	झालावाड
3.	चौली परियोजना	-	झालावाड
4.	हरीशचन्द्र सागर परियोजना	-	झालावाड
5.	बैंथली परियोजना	-	बारां
6.	सावन-भादौं परियोजना	-	कोटा
7.	मानसी वाकल परियोजना	-	उदयपुर
8.	चाकण परियोजना	-	बूँदी

9. इंदिरा लिफ्ट परियोजना	–	सवाई माधोपुर
10. सोम कागदर परियोजना	–	उदयपुर
11. पांचना परियोजना	–	करौली
12. जग्गर परियोजना	–	करौली
13. गंभीर परियोजना	–	करौली
14. बांकली बांध	–	जालौर
15. गुढ़ा योजना	–	बूँदी
16. सेई परियोजना	–	उदयपुर
17. औरई परियोजना	–	चित्तौड़गढ़
18. अजान बाँध	–	भरतपुर
19. नाकोडा बांध	–	बाड़मेर
20. पार्वती परियोजना	–	धौलपुर
21. जसवंत सागर	–	जौधपुर
22. सूकड़ी परियोजना	–	उदयपुर
23. जयसमंद	–	उदयपुर
24. नन्द समंद	–	राजसमंद
25. बाँदी सेंदड	–	जालौर
26. पीपलाद लिफ्ट नहर	–	झालावाड

- **ईसरदा :** सवाई माधोपुर जिले के ईसरदा गांव में बनास नदी के अतिरिक्त जल के उपयोग के लिए बांध बनाया जा रहा है।
- **मनोहर थाना:** मनोहस्थाना कस्बे (झालावाड़ा) के पास परवन नदी पर है।
- **गरदड़ा सिंचाई परियोजना :** बूँदी जिले के होलासपुर गांव में चम्बल की सहायता 'मंगली डूँगरी और गणेशीनाला' नदियाँ पर निर्माणधीन परियोजना।
- ल्हासी परियोजना – बारां
- तकली परियोजना – कोटा

जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं भू-संरक्षण

1. राष्ट्रीय जल ग्रहण विकास कार्यक्रम (NWDP)

प्रारम्भ : – 1990–91 इसे राज्य के 10 जिलों में जारी किया।

उद्देश्य- कृषि योग्य भूमि का उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाना, स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना, प्राकृतिक संसाधनों का स्थायी व सतत् विकास सुनिश्चित करना।

2. पहल परियोजना

प्रारम्भ – नवम्बर,1991 यह परियोजना सीडा (स्वीडन) के सहयोग से प्रारम्भ की गई।

कार्य योजना तैयार करना व क्रियान्वित के साथ गांवों के लोगों में अपने विकास के लिए स्वयं पहल कर सकने की चेतना जागृत करना।

3. एकीकृत बंजर भूमि विकास परियोजना

प्रारम्भ – 1992-93

उद्देश्य – जल ग्रहण परियोजनाओं के माध्यम से गैर वन क्षेत्र में लकड़ी चारा घास मैदान करना ताकि स्थानीय निवासियों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा बंजर भूमि को उपचारित कर उसकी उत्पादकता बढ़ाई जा सके। यह केन्द्र सरकार के सहयोग से 19 जिलों में चलाया जा रहा है।

4.पार्वती-कालीसिंध-चम्बल (PKC) लिंक पर सहमति प्रकट की।

निर्माण कैप्सूल ✍

- **थार का घड़ा** – जैसलमेर से 52 किमी. पूर्व की और मीठे पानी के लिए प्रसिद्ध नलकूल 'चंदन नलकूप' है।
- नीदरलैण्ड के आर्थिक सहयोग से हनुमानगढ़ में सम प्रभावित **क्षेत्रों में इंडो-** डच जल निकासी परियोजना चलाई जा रही है।
- नाडी- एक प्रकार की पोखर जिसमें वर्षा का जल सिंचित होता है।
- **खडीन** – मिटटी का बांधनुमा अस्थायी तालाब होता है। जिसे ढाल वाली भूमि के नीचे बनाया जाता है। यह शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में जल संरक्षण की परम्परागत विधि है।
- **टोबा** – यह नाडी से अधिक गहरा होता है। यह पश्चिमी राजस्थान में पारंपरिक जल स्त्रोत है।